O.P. JINDAL GLOBAL
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE
UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

I.D.E.A.S.
OFFICE of
INTERDISCIPLINARY STUDIES

हरियाणा की आवाज़

HARYANA KI AWAAZ

Volume III Issue II

Photo credit: Freepik

आभार

हम इस अंक के सम्पादन, रूपरेखा और प्रस्तुति में योगदान के लिए प्राची हुड्डा और अंकित दहिया को धन्यवाद देना चाहते हैं। इस अंक के हिंदी अनुवाद के लिए वीना हुड्डा के सहयोग को भी धन्यवाद देते हैं।

हम दादा भूरे खां पर मिले सभी रेस्पोंडेंट्स को भी धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने हमारे साथ अपना समय और अनुभव साझा किया।

हरियाणा के नाम

प्राची हुड्डा

क्यूरेटर

हरियाणा के बारे में हमेशा एक सामान्य धारणा रही है: देहाती, अत्यधिक पितृसत्तात्मक और महिलाओं के प्रति हिंसक। इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र और इसके लोगों का एकपक्षीय चित्रांकन हुआ है। यह चित्रांकन इस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं व बहुमुखी विचारधारा को स्पष्टता से उजागर नहीं करता। साथ ही मास मीडिया और बुद्धिजीवी वर्ग भी यहाँ के लोगों के अनुभवों और सामाजिक भिन्नताओं को समझने में निष्फल रहे हैं।

"प्रगतिशील" विश्वविद्यालयों में मैंने खुद ये अनुभव किया कि इस क्षेत्र से आने वालों को एक सामान्य धारणा का सामना करना पड़ता है। यह मुख्यतः "तुम हरियाणवी नहीं लगते" या "तुम हरियाणवी की तरह बात नहीं करते" जैसी टिप्पणियों और व्यंग्यों के रूप में होता है। यह भी आंशिक रूप से बॉलीवुड में हरियाणा के लोगों के चित्रण से प्रभावित है, जहां अभिनेता उस भाषा को बोलने की कोशिश करते हैं जो हरियाणा में बोले जाने वाली विभिन्न बोलियों से कहीं भी मेल नहीं खाती। इस सामान्य रूप से किये जाने वाले गलत चित्रण (जो केवल वे लोग करते हैं जो इस क्षेत्र से नहीं हैं) को चुनौती भी दी जा रही है। अब वर्तमान समय में कुछ बुद्धिजीवी और युवा वर्ग द्वारा इन धारणाओं को चुनौती देने और जमीनी स्तर की आवाजों के लिए जगह बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस संदर्भ में, यह मासिक अंक "हरियाणा की आवाज़" इस क्षेत्र और इसके लोगों के बारे में अत्यधिक सरल धारणा को चुनौती देने की एक छोटी सी पहल है, जो हरियाणा के लोगों को अपनी कहानियाँ और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका उद्देश्य उन्हें उन सक्रिय कर्ता के रूप में प्रस्तुत करना है जो वे हमेशा से रहे हैं, लेकिन जिसके लिए उन्हें कभी पर्याप्त पहचान नहीं मिल पायी। प्रत्येक अंक हरियाणा के सांस्कृतिक विशेषताओं और इसके विविध सामाजिक समूहों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगा।

मैं ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय (JGU) के ऑफिस ऑफ़ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज (IDEAS) की आभारी हूं, जिन्होंने इस पहल को समर्थन प्रदान किया।

वॉल्यूम ।।। – हरियाणा की धार्मिक प्रवृत्तियां
अंक ।। - हरियाणा के मक़बरे

हरियाणा में रोज़मर्रा की आस्था केवल बड़े और औपचारिक धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं है। यह लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा है। दादा थान, पीर, स्थानीय माताएँ, लोकदेवता और डेरे — ये सब मिलकर ग्रामीण हरियाणा की आध्यात्मिक दुनिया को आकार देते हैं।

गाँवों में सामाजिक और धार्मिक जीवन अक्सर स्थानीय संतों और लोकदेवताओं के इर्द-गिर्द संगठित होता है। इन परंपराओं को जीवित रखने में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। वे साल भर फसल का अन्न, गुड़ और घर में बने साधारण मिष्ठान गाँव के थानों और मढ़ियों पर चढ़ाती हैं। ये चढ़ावे केवल रस्म भर नहीं होते, बल्कि सुरक्षा और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति होते हैं। लोग इन देवताओं की शरण में बीमारी और विपत्ति से बचने के लिए जाते हैं, और परिवार तथा पशुधन की कुशलता की कामना करते हैं।

कुछ लोकदेवता, जैसे गुगा पीर, हरियाणा से बाहर भी व्यापक रूप से पूजे जाते हैं। वहीं खेड़ा या दादा थान जैसे स्थल किसी विशेष गाँव या गोत्र से जुड़े होते हैं और उस धरती की स्मृति और पहचान का हिस्सा बन जाते हैं। पितरों को समर्पित स्थानों पर परिवार अपने पूर्वजों को याद करते हैं और उनका आशीर्वाद मांगते हैं। कई बार कोई छोटा-सा गाँव का थान समय के साथ आसपास के इलाकों में भी लोकप्रिय होने लगता है और एक मान्यता प्राप्त तीर्थ का रूप ले लेता है।

ऐसी लोकआस्थाएँ केवल हरियाणा तक सीमित नहीं हैं, पर यहाँ इनकी अपनी अलग छवि है, जो कृषि-आधारित जीवन और स्थानीय स्मृतियों से गहराई से जुड़ी है।

इस अंक में हमने इन जीवंत परंपराओं पर विचार एकत्र किए हैं। लोकदेवताओं और पितृ-स्थलों पर ध्यान केंद्रित करते हुए हमारा प्रयास है कि ग्रामीण हरियाणा की उस आस्था-परंपरा को सामने लाया जाए, जो आज भी लोगों के जीवन का केंद्र है।

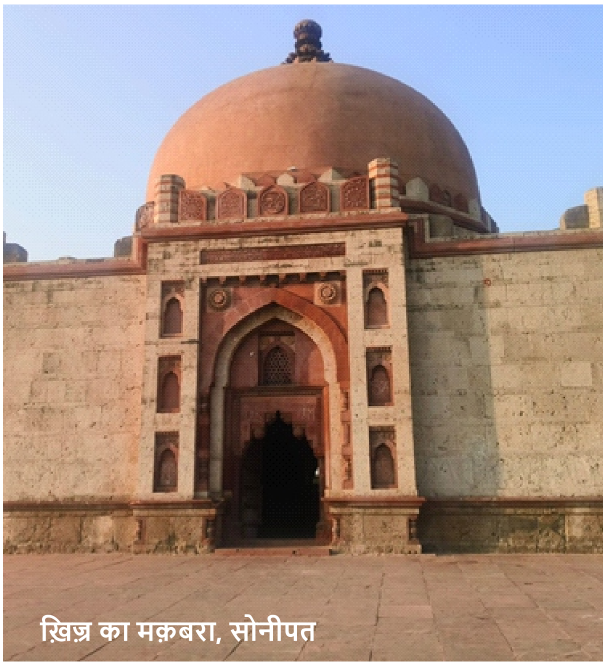

ख़िज़्र का मक़बरा, सोनीपत

सोनीपत के जटवाड़ा गाँव में स्थित ख़िज़्र का मक़बरा लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा है। गाँव की तंग गलियों से होकर, छोटी-छोटी दुकानों और घरों के बीच से गुजरते हुए अचानक एक खुला सा अहाता दिखाई देता है, जिसके भीतर पुरानी दीवारों से घिरा गुंबदों वाला यह मक़बरा खड़ा है। आसपास के लोगों के लिए यहाँ रुकना किसी खास धार्मिक आयोजन का हिस्सा नहीं, बल्कि एक स्वाभाविक दिनचर्या है -- काम से लौटते हुए थोड़ी देर बैठ जाना, स्कूल से बंक मारकर लड़कों का क्रिकेट खेलना, शाम की सैर पर निकलने वालों का रोज़ का ठिकाना बन जाना या बुज़ुर्गों का यहाँ बैठकर गपशप करना। इस मक़बरे को दूर के किसी ऐतिहासिक स्मारक की तरह नहीं, बल्कि अपने मोहल्ले की एक जानी-पहचानी जगह के रूप में देखा जाता है।

इतिहासकारों के अनुसार इस संरचना का निर्माण सोलहवीं सदी की शुरुआत में, लोदी सल्तनत के समय हुआ माना जाता है। लाल पत्थर से बने इस मक़बरे को स्थानीय स्मृतियों में ख़्वाजा ख़िज़्र से जोड़ा जाता है, जिन्हें उत्तर भारतीय लोककथा में एक मार्गदर्शक और संत के रूप में याद किया जाता है। समय के साथ यहाँ अन्य कब्रें भी बनीं और एक छोटी मस्जिद भी जुड़ गई, जिससे यह स्थान धीरे-धीरे एक छोटे धार्मिक परिसर का रूप लेने लगा। स्थापत्य की दृष्टि से यह एक निश्चित ऐतिहासिक काल से जुड़ा है, लेकिन आज इसकी अहमियत इस बात में है कि अलग-अलग पीढ़ियों ने इसे अपने ढंग से अर्थ दिए। जो लोग सोनीपत से परिचित नहीं हैं, उनके लिए इसे केवल मध्यकालीन इमारत नहीं बल्कि शहर के सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन में गुँथा हुआ एक पुराना स्थल समझना अधिक ठीक होगा।

यहाँ कुछ समय बिताने पर लगता है कि पूजा-पद्धति के तौर-तरीके उन लोगों के लिए बहुत परिचित हैं जिनकी पृष्ठभूमि खेती से जुड़ी रही है। मक़बरे पर होने वाले कई काम वैसे ही लगते हैं जैसे किसी गाँव के दादा थान पर किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे के जन्म के बाद परिवार दूध या खीर लेकर यहाँ आता है। थोड़ा हिस्सा कब्र के पास अर्पित किया जाता है और बाकी वहीं बैठे लोगों में बाँट दिया जाता है। कई लोग तब भी आते हैं जब घर में गाय या भैंस

बछड़ा देती है -- मिठाई चढ़ाकर या अगरबत्ती जलाकर आभार जताने और आशीर्वाद लेने के लिए आते हैं। इन कामों को लोग किसी एक धर्म की परंपरा नहीं मानते, बल्कि हरियाणा के ग्रामीण जीवन में महत्वपूर्ण अवसरों को चिन्हित करने के सामान्य तरीकों के रूप में देखते हैं—जैसे जन्म, बीमारी से उबरना, अच्छी फसल या पशुधन का बढ़ना।

कब्र के पास अक्सर अगरबत्ती और धूप जलती रहती है, पताशे चढ़ाए जाते हैं। उसी समय कोई व्यक्ति खामोशी से हाथ उठाकर दुआ करता दिख जाता है, तो कोई महिला हाथ जोड़कर उसी जगह के चक्कर लगाती है। यहाँ मौजूद लोगों को यह सब असामान्य नहीं लगता। बहुत से आगंतुक मक़बरे को उसी भाव से देखते हैं जैसे किसी स्थानीय थान को—एक ऐसी जगह जहाँ अनिश्चित ग्रामीण जीवन में सुरक्षा और स्थिरता की उम्मीद की जाती है। लोग अपनी यात्राओं का कारण भी सीधे-सपाट शब्दों में बताते हैं। पास के एक किसान ने कहा कि वह बुवाई से पहले "फसल के लिए आशीर्वाद लेने" आता है, जैसे अपने पुश्तैनी थान पर जाता है। किसी और ने बताया कि अच्छी पैदावार के बाद वह परिवार के साथ लौटकर साधारण भोजन चढ़ाता है और कुछ देर पेड़ों के नीचे बैठता है। ये आदतें जमीन, मौसम और घर-परिवार की भलाई से जुड़ी आस्था को दर्शाती हैं। लोककथाओं में रक्षक और राह दिखाने वाले संत के रूप में याद किए जाने वाले ख़्वाजा ख़िज़्र इस स्थानीय आस्था में सहज रूप से शामिल हो जाते हैं।

इन नियमित आस्थाओं के साथ-साथ मक़बरे से सम्बंधित कई किस्से सुनने को मिलते हैं । परिसर के भीतर कई कब्रें हैं, और उनकी पहचान को लेकर अलग-अलग राय मिलती है। कुछ लोग उन्हें ख़िज़्र के परिवार के सदस्यों की कब्र बताते हैं। कुछ का कहना है कि मुख्य दीवार के बाहर बनी दो छोटी कब्रें उनके घोड़ों की हैं। एक और कहानी यह सुनाई जाती है कि कभी चोर यहाँ छिपे खज़ाने को चुराने आए थे, लेकिन वे जीवित बाहर नहीं निकल पाए और उनकी कब्रें वहीं बन गईं—इसे लोग दैवी शक्ति का संकेत मानते हैं। ऐसे किस्से ऐतिहासिक प्रमाण से ज़्यादा लोगों की कल्पना और स्मृति में इस जगह को जीवंत रखते हैं।

साथ ही, यह परिसर एक सामान्य सार्वजनिक स्थल की तरह भी काम करता है। खुले मैदान में दोपहर के समय युवक क्रिकेट खेलते दिखाई देते हैं। शाम को बुज़ुर्ग महिलाएँ कभी-कभी भजन गाने के लिए इकट्ठा हो जाती हैं, जबकि कुछ बुज़ुर्ग पुरुष हुक्का पीते हुए ताश खेलते नज़र आते हैं। इसके साथ साथ कुछ युगल भी शांत कोनों में बैठते हैं और कभी-कभार दीवारों पर अपने नाम भी लिख देते हैं। इस तरह यह स्मारक रोज़मर्रा के सामाजिक जीवन का हिस्सा बन जाता है—समय बिताने, मिलने-जुलने या थोड़ी देर सुकून पाने की जगह। रात गहराने लगती है तो परिवार लौटने लगते हैं। कुछ नियमित आने वाले लोग बताते हैं कि हाल के वर्षों में यहाँ शराब पीने या नशे के इस्तेमाल की घटनाएँ भी बढ़ी हैं। यह मक़बरा भी, शहर के कई अन्य स्थानों की तरह, बदलते और फैलते कस्बाई जीवन की विरोधाभासों को अपने भीतर समेटे हुए है।

ख़िज़्र के मक़बरे को ध्यान से देखने पर समझ आता है कि खेती से जुड़े पुराने धार्मिक तौर-तरीके अलग-अलग परिवेशों में आज भी नए रूपों में दिखाई देते हैं। यहाँ चढ़ाए जाने वाले प्रसाद या भेंट गाँव के दादा थान जैसे ही लगते हैं, यहाँ आने का समय भी अक्सर पारिवारिक और कृषि से जुड़े अवसरों के अनुसार तय होता है, और इस जगह से जुड़ी कहानियाँ रोज़मर्रा की बातचीत के साथ बदलती और आगे बढ़ती रहती हैं।

टीम, हरियाणा की आवाज़

प्राची हुड्डा
लीड
हरियाणा की आवाज़

अंकित दहिया
मैम्बर एसोसिएट
हरियाणा की आवाज़

JGU at a GLANCE

16000+ Students — FEMALE 51% | MALE 49% | UNDERGRADUATE 80% | MASTERS/DOCTORAL 20%

1100+ Faculty — FEMALE 56% | MALE 44%

35 Average age of Faculty Members

45% Faculty Members are Alumni of the top **200** Global Universities

4000+ Faculty & Administrative Staff from **54** countries

15000+ Alumni Network World-Wide

28 Indian States & Union Territories represented by Students

12 SCHOOLS

50+ Programmes

- **30+** Undergraduate Programmes
- **20+** Postgraduate Programmes
- Doctoral Programme

- Jindal Global Law School — *India's First Global Law School*
- Jindal Global Business School — India's First Multi-Disciplinary Global Business School
- Jindal School of International Affairs — *India's First Global Policy School*
- Jindal School of Government and Public Policy — *India's First Public Policy School*
- Jindal School of Liberal Arts & Humanities — *India's First Transnational Humanities School*
- Jindal School of Journalism & Communication — *India's First Global Media School*
- Jindal School of Design & Architecture — India's Global Design and Architecture School
- Jindal School of Banking & Finance — *India's First Global Finance School*
- Jindal School of Environment & Sustainability
- Jindal School of Psychology & Counselling — *India's First Transdisciplinary Psychology School*
- Jindal School of Languages & Literature — *India's Global School of Language & Literature Studies*
- Jindal School of Public Health & Human Development

RESEARCH

9200+ Publications

65+ Interdisciplinary research centres

6 Research & capacity building institutes

- JILDEE — Jindal Institute of Leadership Development and Executive Education
- Jindal Institute of Behavioural Sciences
- IIHEd — International Institute for Higher Education Research & Capacity Building — O.P. Jindal Global University
- Jindal India Institute — Propelling the Indian Century — O.P. Jindal Global University
- Jindal Institute of Haryana Studies
- MJAS — Motwani Jadeja Institute for American Studies — O.P. Jindal Global University

INTERNATIONAL COLLABORATIONS

600+ Collaborations with International Universities & Higher Education Institutions

10 Forms of Global Partnerships

80+ Countries & Regions

300+ Faculty & Student Exchange Collaborations

100+ Countries represented by Students

RANKINGS & RECOGNITIONS

QS World University Rankings by Subject 2025:
- Ranked No.1 in India — Law & Legal Studies
- Ranked No.1 Private University in India — Arts & Humanities
- Ranked No.1 Private University in India — Politics & International Studies

Times Higher Education Subject Rankings 2026:
- Ranked No.1 in India for Law
- Ranked No.2 in India for Psychology

AACSB Accredited:
- Among 6% B-Schools globally with AACSB Accreditation

CONFERRED THE STATUS OF AN

INSTITUTION OF EMINENCE BY THE MINISTRY OF EDUCATION GOVERNMENT OF INDIA

Sonipat-131001, (NCR of Delhi) | www.jgu.edu.in

JGU - An Initiative of Jindal Foundation